संकट मोचन हनुमानष्टकम्

बाल समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो
ताहि सो त्रास भयो जग -को, यंहा संकट कांहु सो जात न तारो
देवन-आनी करी बिनती, तब छड़ी दियो रवि कष्ट निवारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

बाली की त्रास कपीस बसय गिरी जात महाप्रभु देखि विचारों
चौकी महामुनि श्राप दियो तब चाहिए कौन विचार विचारों
लय दीज रूप लिवाए महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

अंगद के सांग लेना गये, सिया खोज कपीस यहाँ बैन उचारो
जीवता -न बचिहौ हम -सो, जुबीना सुधि लायी-इंहा पगु धारो
हैरी थकी तट सिंधु सबै, तब लायी सिया सुधि प्राण उबारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

रावण त्रास ढाई सिया को, सब रक्षांसि सब राक्षसी सो कही शोक निवारो
ताहि समय हनुमान महा प्रभु जाय महारज निचरमारो
चाहत- सिय अशोक सो-आंगी, सू -दे प्रभु मुद्रिका सोक निवारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

बाण लाग्यो उर लक्ष्मण को, तब प्राण तजय सुत रावण मारो
ले-ग्रह वैद्य सुषेण समेत, तबहे गिरी द्रोन सु बीर उबारो
आनी संजीवन हाथ दई, तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

रावण युद्ध अजान किया तब नाग कि फास सबय सिर डारो
श्री रघुनाथ समेत सबय, दल-मोह भयो यह संकट भारो
आनी खगेश तबै हनुमान-जु, बंधन काटी सुत्रास निवारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

बंधू समेत जबै -अहिरावण, लय रघुनाथ पाताल सिधारो
देविहि पूजी भली विधि, सो-बलि देहु सबै मिली मंत्र विचारों
जाए सहाई भयो तबहि, अहि-रावण सैन्य समेत सँहारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

काज किये बड़ देवन के, तुम बीर महा प्रभु देखि बिचारो
कौन सो सकता मोरा गरीब, को-जो तूमा सो नहीं जाता है तारो
बेगि हरो हनुमान महा प्रभु, सो-कछु संकट होय हमारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो

दोहा:

लाल देहि लाली लसय, अरुधरी लाल लंगूर
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर